वह बर्फीली चाँदनी रात

खजान सिंह

जून-जुलाई की उमस भरी तेज़ गर्मी में उस बर्फीली चाँदनी रात की याद मन में ताज़गी भर देती है। पर उस रात की बात से पहले बर्फ से जुड़ी कुछ और बातें याद करना चाहता हूँ।

मेरा गाँव उत्तराखण्ड में देहरादून की पहाड़ियों पर बसा है। जब मैं छोटा था तब हर साल वहाँ खूब बर्फ गिरती थी और कई-कई दिनों तक जमी रहती थी। अब तो बर्फ का गिरना काफी कम हो गया है। पहले सर्दियाँ शुरू होने से पहले ही लोग अपने जानवरों के लिए घास सुखाकर रख लेते थे। और अपने लिए लकड़ी, अनाज, दालें और सब्ज़ियाँ। अनाज को घराट (पनचक्की) में पिसवाकर रखा जाता था। नमक, तेल, गुड़, मिट्टी का तेल पहले ही खरीदकर रख लिया जाता था। कुछ पैसे वाले लोगों के लिए जाड़े के मौसम का मतलब लम्बा आराम और खुशियाँ होता था। लेकिन बाकियों के लिए यह मौसम बड़े कष्ट लेकर आता था। एक तो हाड़ कँपा देने वाला जाड़ा और ऊपर से जमा किए गए सामान का जल्दी-जल्दी खत्म होना। इस चिन्ता के कारण हमारे लिए बर्फ का गिरना एक अप्रिय घटना होती थी। लेकिन जाड़े के कुछ मज़े तो थे ही। जैसे, घर के बीचोंबीच बड़ी-सी अँगीठी जलती रहती थी। अलाव जैसी लगती थी वह हमें। हम सब बच्चे उसके चारों ओर तापने के लिए बैठ जाया करते थे। फिर शुरू होता किस्से-कहानियों का सिलसिला जो दिन भर चलता। हम लोग माँ से अक्सर एक कहानी सुनाने की ज़िद करते थे:

तीन छोटे-छोटे भाई-बहन थे। उनकी माँ नहीं थी। जाड़ा शुरू होने वाला था। उनके पिताजी दूर हिमांचल में चौलाई (लोबिया) ओसाने गए थे ताकि जाड़े में खाने की व्यवस्था हो सके। पर उनके पिता बर्फ गिरने तक नहीं लौटे। उस साल बहुत ज़्यादा बर्फ गिरी। बच्चों के पास खाने की चीज़ें खत्म हो गई थीं। कपड़े भी कम ही थे। उनके पड़ोसियों ने अपने घर की सीढ़ी उल्टी कर दी ताकि बच्चे मदद के लिए उनके घर न आ सकें। जब उनके पिताजी किसी तरह बर्फ में से होते हुए घर लौटे तो देखते क्या हैं कि बड़े भाई की गोद में छोटा भाई और बहन भूखे-प्यासे सोए-सोए मर चुके थे। पिताजी ने अपनी जीभ काटी और वे भी मर गए।

इस कहानी को सुनकर हम लोग सुबकने लगते थे। कहानी का यह अन्त हमें दुखी कर देता। हम लोग इसे यूँ आगे बढ़ाते:

असल में बच्चे मरे नहीं थे, बस जाड़ा खा गए थे। तब उनके पिता ने गर्म दाल पकाई। उस रात आसमान से बर्फ के फूल नहीं गिरे बल्कि भात की बरसात हुई। सब बच्चों ने थाली भर-भर भात खाया। रात को हमें सपना भी आता कि पूरा आँगन भात से भरा है। हम छककर भात खा रहे हैं – दोनों हाथों से।

काफी समय गुज़रा। हम बड़े हुए। मैं पढ़ने के लिए लखनऊ आ गया। बी.ए. में मैं हिन्दी साहित्य और दर्शन शास्त्र पढ़ता था। हमारे शिक्षक चाँदनी रात में बर्फ की सुन्दरता का बखान करते। हमने भी पंचवटी नाम की कविता पढ़ी थी – "चारू चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में"।

उस साल जाड़े की छुट्टी में मैं घर गया था। उस रात खूब बर्फ गिरी। अगले दिन भी गिरी। अगली रात को आसमान साफ हो गया। चाँदनी बर्फ की सफेद चादर पर चमकने लगी। मैंने निश्चय किया कि आधी रात को घर से निकलूँगा चाँदनी रात देखने। मैंने सबके सोने का इन्तज़ार किया। आधी रात को कपड़े पहने, जूते कसे, छड़ी ली और गाँव से दूर बर्फीली चाँदनी रात को देखने निकल पड़ा। क्या अद्‌भुत नज़ारा था! उस सुन्दरता को तो बस महसूस किया जा सकता है।

मेरे पिताजी को खटका हुआ। सुबह उन्होंने घर में मीटिंग बैठाई। पूछा, "इतनी देर रात को कहाँ गया था?" मैं बोला, "चाँदनी रात में बर्फ देखने।" सब हँसने लगे। पिताजी को लगा कि इसके दिमाग में कुछ गड़बड़ी हो गई है। शायद भूत-प्रेत का साया हो। मेरे लिए पूजा-पाठ करना भी तय किया गया। बाबू बोले कि इतनी ठण्डी रात में बर्फ देखना पागलपन के सिवा क्या है? अब मैं उनको क्या समझाता कि रात हमेशा काली ही नहीं सफेद भी हो सकती है – चाँदी जैसी सफेद।

चक मक

चित्र: कनक